एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

Scanned by CamScanner

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-22

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, प्रथम वर्ष

****

प्रथम पत्र

****

Scanned by CamScanner

तुलसीदास

****

तुलसीदास रामभक्ति शाखा के सुप्रसिद्ध कवि हैं. इनके यश व कीर्ति का मुख्य आधार 'रामचरितमानस' है. जो केवल हिंदी का ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त करने का अधिकारी है. 'रामचरितमानस' सात भागों में विभक्त है :

(१) बाल काण्ड

Scanned by CamScanner

(२) अयोध्या काण्ड

(३) अरण्य काण्ड

(४) किष्किंधा काण्ड

(५) सुंदर काण्ड

(६) लंका काण्ड

(७) उत्तर काण्ड

Scanned by CamScanner

हमारे पाठ्यक्रम बी.ए.(ऑनर्स) हिंदी ,प्रथम वर्ष में तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के दो प्रमुख कांड का अध्ययन करना है, जो निम्नलिखित हैं :

(१) अयोध्या काण्ड

(२) उत्तर काण्ड

प्रस्तुत खंड में 'रामचरितमानस' के 'अयोध्या काण्ड' का अध्ययन व विश्लेषण किया गया है :

Scanned by CamScanner

'अयोध्या काण्ड'

****

यस्यांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शंकरः पातु
माम्॥ 1॥

Scanned by CamScanner

जिनकी गोद में हिमाचलसुता पार्वती, मस्तक पर गंगा, ललाट पर द्वितीया का चंद्रमा, कंठ में हलाहल विष और वक्षस्थल पर सर्पराज शेष सुशोभित हैं, वे भस्म से विभूषित, देवताओं में श्रेष्ठ, सर्वेश्वर, संहारकर्ता (या भक्तों के पापनाशक), सर्वव्यापक, कल्याण रूप, चंद्रमा के समान शुभ्रवर्ण श्री शंकर सदा मेरी रक्षा करें॥ 1॥

('रामचरितमानस' के अयोध्या काण्ड का शेष अध्ययन व विश्लेषण भाग- 23 में...)

Scanned by CamScanner